(01), (07) **काव्य - प्रयोजन** (उद्देश्य) PAGE NO.:
(03), (05) DATE: / /200

Ques: विभिन्न आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य - प्रयोजनों की समीक्षा करें।

→ किसी भी कार्य को करने के पीछे उसके कर्त्ता का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य रहता है। मानव की प्रत्येक प्रवृत्ति कारण - विशेष से होती है। काव्य की सर्जना के पीछे भी उसके सर्जक का कुछ उद्देश्य अवश्य रहता है। यही उद्देश्य काव्य का प्रयोजन कहलाता है। और इसी प्रयोजन से प्रेरित होकर वह काव्य लिखता है।

भारतीय काव्य - शास्त्र के प्रणेताओं ने इन प्रयोजनों को अपने - अपने ढंग से देखा है। भारतीय विचारधारा में काव्य के प्रयोजनों पर विचार करते हुए सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की अवहेलना नहीं की गई है। अतः धर्म और शिक्षा आदि भी काव्य के प्रयोजन निर्धारित किए गए हैं। भारतीय मनीषियों (विद्वानों) ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति को जीवन का उद्देश्य बताया है। काव्य-शास्त्रियों का भी काव्य - रचना के पीछे प्रयोजन इसी चतुर्वर्ग की सिद्धि रहा है।

आदि आचार्य भरत मुनि से लेकर अबतक सभी आचार्यों ने किसी न किसी रूप से इन काव्य - प्रयोजनों का विवेचन किया है।

* **भरत मुनि :→** भरत मुनि के अनुसार काव्य का प्रयोजन दुःखों का हरण है।

* **भामह :→** भामह ने काव्य - प्रयोजनों का वर्णन

Teacher's Signature________

"धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च ।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधु काव्यनिषेवणम् ॥" — भामह

PAGE NO.:
DATE: / /200

दो आधारों पर किया है — (i) कवि और पाठक को आधार मानकर और (ii) केवल कवि को आधार मानकर। उनके अनुसार काव्य - रचना से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है, कला में नैपुण्य मिलता है और कीर्ति तथा आनंद की प्राप्ति होती है।

*** वामन :→** वामन ने भी कीर्ति और आनंदानुभूति को काव्य का प्रयोजन माना है।

*** रुद्रट :→** रुद्रट ने काव्य - प्रयोजन पर अधिक विस्तार से वर्णन किया है। उन्होंने काव्य के अनेक प्रयोजन बताए हैं — धन - प्राप्ति, विपत्ति नाश, अलौकिक आनंद, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति, किन्तु सबसे अधिक महत्त्व उन्होंने यश को प्रदान किया है।

*** मम्मट :→** भारतीय काव्यशास्त्र के इतिहास में 'काव्य - प्रकाशकार' मम्मट द्वारा प्रतिपादित काव्य प्रयोजन सर्वाधिक मान्य है। उनके अनुसार काव्य के प्रयोजन हैं → यश, अर्थ, व्यवहार ज्ञान, आशिव की क्षति (या अमंगल निवारक), अलौकिक आनंद की प्राप्ति और कान्ता सम्मत उपदेश।

(i) यश :→ यश की कामना प्रत्येक व्यक्ति को होती है, इसलिए यह एक प्रधान प्रेरक तत्त्व है। भर्तृहरि के अनुसार कवि का भौतिक शरीर नष्ट हो जाता है किन्तु जरा - मरण से रहित यश -

"काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ॥"
— मम्मट

PAGE NO.:
DATE: / /200

शरीर अमर रहता है। कालिदास, भवभूति, जायसी आदि कवियों ने यश के लिए ही काव्य - सृजन किया था।

(ii) अर्थ :→ यह काव्य का भौतिक प्रयोजन है, क्योंकि संसार के प्रत्येक व्यक्ति को इसकी आवश्यकता होती है। केशवदास, बिहारी जैसे अनेक कवियों ने काव्य - रचना के द्वारा अर्थोपार्जन किया था। यद्यपि सभी कवि अर्थ के लोभ से काव्य - सृजन नहीं करते हैं। तुलसीदास और कुंभनदास ने काव्य की रचना 'स्वान्तः सुखाय' की थी।

(iii) व्यवहार ज्ञान :→ यह प्रयोजन पाठकों के लिए है। कवि पाठकों के समक्ष अपने जीवन के अनुभवों पर आधारित आदर्शों का प्रतिपादन करता है और पाठक उससे रीति - व्यवहार का सहज ज्ञान प्राप्त करते हैं।

(iv) अमंगल निवारक :→ काव्य से अनिष्ट का निवारण भी होता है। अनेक कवियों ने काव्य - रचनाओं के द्वारा अपने कष्टों का निवारण किया है। उदाहरण स्वरूप बाहु - पीड़ा को दूर करने के लिए 'हनुमान बाहुक' की रचना की थी। आज के कवियों और लेखकों की रचनाओं से भी राष्ट्रीयता का प्रसार तो होता ही है, व्यक्ति और समाज के कष्ट दूर होते हैं।

(v) अलौकिक आनंद :→ यह काव्य का मूल उद्देश्य है। काव्य के आस्वादन से जो रस रूपी आनंद मिलता है, वही काव्य का लक्ष्य है। काव्य से उत्पन्न होने वाला आनंद पाठक और कवि दोनों को मिलता है। यह आनंद जीवन की विषमता और वेदना को दूर कर शांति प्रदान करता है। यह सभी प्रयोजनों का प्रयोजन है।

(vi) कान्ता सम्मत उपदेश :→ काव्य का एक प्रयोजन पत्नी के समान मधुर उपदेश देना भी है। अनेक संतों की रचनाएँ इसी कोटि में आती हैं। 'पंचतंत्र' और 'हितोपदेश' का सृजन इसी उद्देश्य को लक्ष्य कर हुआ था।

हिन्दी के रीतिकालीन एवं आधुनिक आचार्यों ने भी काव्य - प्रयोजनों पर विचार किया है। इन सब पर आचार्य मम्मट का प्रभाव परिलक्षित होता है।

पाश्चात्य साहित्य तथा युगीन परिस्थितियों से प्रभावित हिन्दी के आधुनिक विद्वानों ने लोकमंगल, जीवन की आलोचना, चरित्र - सुधार, यश, मनोरंजन, शिक्षा, स्वान्तः सुखाय, समाज के प्रति विश्वास आदि तत्वों को काव्य का प्रयोजन माना है। प्रख्यात रसवादी आलोचक डॉ॰ नगेन्द्र काव्य का प्रयोजन कवि की आत्माभिव्यक्ति की भावना मानते हैं।

सभी मतों का अनुशीलन करने पर यह स्पष्ट होता है कि अनुभूति को सुन्दर से सुन्दर रूप में अभिव्यक्त करना ही

PAGE NO.:
DATE: / /200

कवि का प्रयोजन होता है। अलौकिक आनंद में लीन होकर, लोकमंगल की कामना से प्रेरित होकर कवि लिखता है और पाठक उसमें अलौकिक आनंद का अनुभव करता है। यही काव्य का प्रयोजन है।

Teacher's Signature